6. उत्तर भारत के गांव व भोगपति

(सन् 700 से सन् 1200)

नए-नए राजवंश जिस समय बन रहे थे उस समय ांव वालों का जीवन कैसा रहा होगा? उन दिनों के गांव ाज के गांवों से बहुत फर्क थे। तब गांवों में कहीं भी बिजली, ट्रैक्टर या मोटर देखने को नहीं मिलती थी। मगर इन बातों के अलावा एक और बड़ा अन्तर था। उन दिनों उत्तर भारत के अधिकांश गांवों पर भोगपतियों का अधिकार था। भोगपति कौन थे- वे गांव में क्या करते थे- चलो आगे पढ़कर देखें।

राजवंशों के समय में अधिकारी

उस समय राजा अपने सगे संबंधियों को ही ऊंचे पदों पर नियुक्त करता था। राज्य के बड़े अधिकारी व सेनापति राजा के वंश के लोग या उसके रिश्तेदार ही होते थे। इसलिए उन्हें राजपुत्र भी कहा जाता था। उन अधिकारियों को तरह-तरह की उपाधियां दी जाती थीं। जैसे, राणा, रावत, ठाकुर आदि।

राजा इन अधिकारियों व सेनापतियों को निश्चित वेतन नहीं देता था। वेतन के बदले में राजा उनसे कहता था, "तुम इन दस गांवों पर भोगपति बनकर भोग करो।" या "तुम इन चालीस गांवों पर भोगपति बनकर भोग करो।" इस तरह वेतन के बदले में राजा अपने अधिकारियों को यह अधिकार देता था कि वे कुछ गांवों व शहरों की लगान अपने पास रखकर भोगें।

भोगपति और गांव

जब राजा ऐसा कहता तो वह भोगपति अपने भोग के गांवों में जाकर अधिकार जमाता। वह उन गांवों के किसानों से उनकी फसल का एक बड़ा हिस्सा लगान के रूप में ले लेता था। साथ ही किसी न किसी बहाने नए-नए कर ज़बरदस्ती इकट्ठा करता था। शादी-ब्याह पर, पेड़ काटने पर, मछली मारने पर, ढोरों पर, घरों पर, अरघट्ट व कुओं पर, यात्रा करने पर, ऐसे किसी भी बहाने भोगपति गांव से कर वसूल करता था। वह गांव वालों से तरह-तरह के काम बिना वेतन दिए भी करवाता था।

राजा के अधिकारी उसके ..... होते थे।

राणा, रावत, ठाकुर ..... थीं।

उन्हें वेतन के रूप में ..... मिलते थे।

"तुम इन दस गांवों का भोग करो"

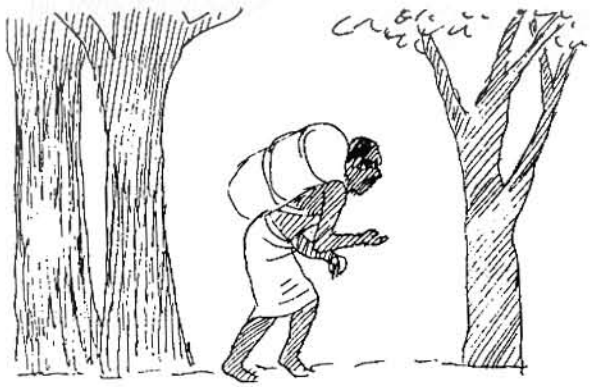

भोगपति गांव वालों से बेगार करवाते थे

तब और आज

ज़रा सोचो तुम्हारे गांव या शहर में कोई ऐसे आकर रौब जमाये तो क्या हो? लोगों को कितनी मुसीबत झेलनी पड़ेगी!

वो दिन आज से काफी फर्क थे। आजकल यह निश्चित होता है कि सरकार लोगों से कौन से कर लेती है और कर में कितने पैसे लेती है। इस बात का कानून संसद और विधान-सभा में बनता है। सरकार या सरकारी अधिकारी जब जो चाहें, लोगों से वसूल नहीं कर सकते। मगर उन दिनों ऐसा नहीं था। तब राजा, राणा व ठाकुर लोगों से मनमाने कर वसूलते थे।

गांव का मुखिया

राणा व ठाकुरों के लिए गांव से कर कौन इकट्ठा करता था? यह काम गांव के मुखिया का था। मुखिया गांव वालों से कर इकट्ठा करके भोगपतियों (राणा-ठाकुरों) तक पहुंचाता था। इस काम के बदले उसे कई फायदे मिले हुये थे। मुखिया को अपनी जोत पर कर देने से छूट थी। वह गांव वालों से अपने लिए अलग से कुछ कर भी इकट्ठा कर सकता था।

आजकल गांव से लगान (या तौजी) इकट्ठा करने का काम कौन लोग करते हैं? उन्हें इस काम के लिए क्या मिलता है?

लगान का उपयोग

कर में मिले धन व सामान का भोगपति क्या किया करते थे? क्या वे इस धन को राजा तक पहुंचा देते थे?

नहीं ! उन्हें अधिकार था कि वे अपने भोग के गांवों से मिले करों को अपने पास ही रखें। आखिर यही उनका वेतन था- राजा तो उन्हें अलग से कोई वेतन नहीं देता था। गांव से मिले धन को राणा व ठाकुर अपनी इच्छानुसार खर्च कर सकते थे।

वे इस धन से अपने लिए बड़े महल व किले बनवाते थे। अपने लिए कीमती व बढ़िया अस्त्र-शस्त्र व घोड़े खरीदते थे। बड़े-बड़े मंदिर बनवाते थे। इन सब कामों के लिए वे अपने भोग के गांववालों से बेगार करवाते थे। गांववालों को भोगपति के आदेश पर उसके महल, किले, मंदिर बनवाने पड़ते- इसके लिए उन्हें कोई मज़दूरी नहीं दी जाती थी।

जब भी कोई राणा या ठाकुर गांव से गुज़रता तो लोगों को उसकी खातिरदारी करनी पड़ती थी और उसका सामान ढोना पड़ता था।

कभी-कभी ये भोगपति गांव में कुएं, बावड़ी, अरघट्ट या तालाब भी बनवाते थे- ताकि सिंचाई बढ़े। इसके बदले में वे किसानों से खेती के उत्पादन का कुछ हिस्सा ले लेते थे।

राणा व ठाकुर मंदिरों व मठों को अक्सर "दान" दिया करते थे। पर दान के लिए वे हमेशा अपना धन खर्च नहीं करते थे। वे अपने भोग के गांव वालों से कहते- "आपके गांव के प्रत्येक हल पर या अरघट्ट पर कुछ सिक्के या अनाज मंदिर में मेरे नाम से हर साल जमा करिये।"

इस प्रकार के बहुत से शिलालेख हमें सन् 700 से लेकर सन् 1200 तक मिलते हैं।

भोगपति गांव वालों से किस तरह का व्यवहार करते थे- इस विषय में चार वाक्य रेखांकित करो।

राजा के अधिकारी और भोगपति में अन्तर

तुमने पिछले वर्ष अजातशत्रु और अशोक के बारे में पढ़ा था। इन राजाओं के समय में भोगपति नहीं थे। तब राजा अपने राज्य के कामकाज के लिए अधिकारी, सेनापति और मंत्रियों को नियुक्त करता था। वे लोगों से कर वसूल करके राजा को पहुंचाते थे। इसके बदले में उन्हें राजा नियमित वेतन देता था।

अधिकारियों के बारे में उन दो बातों को रेखांकित करो जो बाद के समय के भोगपतियों से भिन्न थीं।

अभ्यास के प्रश्न

1. सन् 700 से सन् 1200 के समय में उत्तर भारत के गांव से लगान इकट्ठा करने का अधिकार किसको था?
2. उन दिनों गांव का मुखिया अपनी जोत पर लगान नहीं देता था। उसे यह लाभ किस लिए मिला हुआ था?
3. राणा, ठाकुर आदि लोग दान किस तरह देते थे?
4. गांव के लोगों को भोगपतियों को क्या-क्या देना पड़ता था, और उनके लिए क्या-क्या करना पड़ता था?
5. अशोक के समय में राजा के पास राज्य का लगान अधिक पहुंचता होगा या राजवंशों के समय में? कारण समझाओ।
6. अशोक के समय में अधिकारियों की आमदनी निश्चित थी या राजवंशों के समय में ? कारण समझाओ।
7. राणा या ठाकुरों के व्यवहार की क्या बातें आज ग़ैरकानूनी हो गई हैं?
8. भोग में मिले धन का भोगपति क्या उपयोग करते थे?
9. राजा अधिकारियों को भोग करने के लिए गांव क्यों देता था?

भोगपति गांव वालों की बेगार से किले और महल बनवाते थे